17

पिन्तेकुस्त का दिन

प्रेरितों 2

''सो जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए'' (प्रेरितों 2:41)।

पिन्तेकुस्त के दिन जो हुआ उसे हम बयान कैसे कर सकते हैं (प्रेरितों 2)? उस एक दिन में, तीन हज़ार बपतिस्मे हुए थे, जिनमें पूरे ज्ञात संसार से लोग शामिल थे। कितना अद्‌भुत है! वक्ता पतरस एक अज्ञात प्रचारक था, जिसने रब्बी होने का प्रशिक्षण भी नहीं पाया था। उसे मालूम नहीं था कि भीड़ के सामने वह क्या बोलने वाला है। पवित्र आत्मा ने सही शब्द उसके मुंह में डाले। उसने लोगों को बताया कि यीशु कौन था और उसने लोगों के लिए क्या किया। इस दिन संसार के इतिहास में सुसमाचार संदेश को सबसे अधिक लोगों ने ग्रहण किया था। अब तक की सबसे शानदार चीज़ अर्थात कलीसिया का जन्म क्रूस और इस दिन वचन सुनाए जाने से ही हुआ था।

परमेश्वर ने संयोग वाली बात ही नहीं रहने दी। उसने इस सबको मिला दिया। फसह मनाने के लिए हज़ारों यहूदी यरूशलेम में आए हुए थे। कइयों के लिए यह प्रमुख धार्मिक यात्रा थी, जो शायद जीवन में एक ही बार मिलने वाला अवसर था। इनमें से कई लोग *पचास दिन* बाद आने वाले पिन्तेकुस्त के पर्व तक यरूशलेम में ही रुक गए थे। इन लोगों की बहुत बड़ी भीड़ थी। उनमें फसह, क्रूस और खाली कब्र की चर्चा बन्द नहीं हुई थी।

उन्होंने ऐसा फसह कभी नहीं देखा था! जो कुछ हुआ उस पर विचार करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को पचास दिन का समय दिया था। भूकम्पों से ''उनके दांत किरकिराहट से भर गए थे'' (मत्ती 27:51-53)। दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक देश में अन्धियारा छाया रहा (मत्ती 27:45; मरकुस 15:33; लूका 23:44)। परमेश्वर ने लोगों को यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दे दी, परन्तु उसे मरते हुए देखने का आनन्द नहीं लेने दिया। दोपहर 12 से शाम 3 बजे तक यह समय डरावना और भूतिया था! लोग इतना सहम गए कि न तो वहां खड़े रह सकते थे और न ही वहां भाग सकते थे।

उनके मन में था कि ''हमने क्या कर दिया?'' चट्टानें तिड़क गईं। कब्रें खुल गईं। इन खुली हुई क़बों में से पुनरुत्थान के बाद जाने-पहचाने लोग नगर में घूम रहे थे (मत्ती 27:51, 52)। (तीसरे पहर के समय) जब याजक मन्दिर में सेवा कर रहे थे, पर्दा ऊपर से लेकर नीचे तक फट गया (मत्ती 27:51; मरकुस 15:38; लूका 23:45)। ''उसे क्रूस दो!'' का नारा अब घबराहट में बदल गया था। लोगों को कुछ समझ नहीं आ रहा था, घबराहट में वे अपनी

छातियां पीटने लगे। यहां तक कि रोमी सूबेदार, और सिपाही, जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने में सहायता की थी, मान गए कि ''सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था'' (देखें मत्ती 27:54; मरकुस 15:39)।

पचास दिन तक वे सब लोग, जो यरूशलेम में जमा हुए थे, खुली कब्र को देख सकते थे। पिलातुस और यहूदी अगुओं को मालूम था कि यीशु जी उठा था। कोई खोजी दल नहीं भेजा गया था। प्रेरितों से पूछताछ नहीं की गई थी। शत्रुओं को चेलों से भी पहले पता चल गया था।

यीशु जी उठा था। वह दोबारा नहीं मरा; बल्कि चालीस दिन तक अपने चेलों को दिखाई देते रहने के बाद (प्रेरितों 1:3), वह स्वर्ग में अपने पिता के पास ऊपर उठा लिया गया। वह बादलों में ऊपर उठा लिया गया और अब परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (इफिसियों 1:20; कुलुस्सियों 3:1)। ऊपर उठाए जाने से पहले, यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और सारे यहूदिया में, और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे'' (प्रेरितों 1:8)। यह प्रतिज्ञा केवल कुछ दिन बाद पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हो गई।

उस अवसर पर परमेश्वर एक बड़ी आंधी के साथ आया। पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को भर दिया। उन के ऊपर आग जैसी जीभें उतरीं। सब प्रेरित अन्य-अन्य भाषाओं में परमेश्वर के अद्‌भुत कामों का वर्णन करने लगे। फिर प्रमुख प्रवचन (सरमन) में परतस ने उस सब पर वचन सुनाया जो *पचास दिन पहले* हुआ था! उसने कहा कि उसके सुनने वाले उन बातों के गवाह ही नहीं, बल्कि करने वाले भी थे। उसने उन्हें हत्यारे कहा, जिन्होंने परमेश्वर के पुत्र को मार डाला था! उनके दिल छिद गए। भयभीत होकर वे पुकार उठे। उन्होंने मन फिराया। तीन हज़ार लोगों को पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा दिया गया। उनके मन परिवर्तन के साथ यरूशलेम में पिन्तेकुस्त के इस दिन कलीसिया का आरम्भ हुआ।

इतिहास हमें बताता है कि ''अब तक जितनी भी सेनाओं ने मार्च किया है, जितनी भी संसदें बैठी हैं, जितने भी राजा हुए हैं,''[1] किसी ने भी हमें उतना प्रभावित नहीं किया, जितना अकेले यीशु मसीह के जीवन ने किया है। उन तीन हज़ार लोगों का बपतिस्मा संयोग नहीं था। शैतान उतना चालाक नहीं था, जितना वह अपने आप को समझता था। शैतान को कम न समझें, उसे अधिक भी न समझें। क्या शैतान को लगा कि वह परमेश्वर को मार डालेगा? यकीनन उसे पता था कि यदि वह परमेश्वर को मार भी दे तो भी परमेश्वर मरा नहीं रह सकता। यह सोच कर कि वह जीत गया है, शैतान खुद हार गया।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]जेम्स एलन फ्रांसिस, ''अराइज़, सर नाइट,'' म *''द रीअली जीज़स'' एंड अदर सरमन्स* (फिलाडेल्फिया: जुडसन प्रैस, 1926), 123-24.